

डॉ. रॉबर्ट यारब्रो, द जोहानिन एपिस्टल्स, सत्र 2बी - 1, 2, और 3 यूहन्ना में धार्मिक विषय

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो द्वारा जोहानिन पत्र, मसीह में जीवन को संतुलित करना पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र संख्या 2बी है, 1, 2, और 3 जॉन में धर्मशास्त्रीय विषय।

हम जॉन के पत्रों का अपना अध्ययन जारी रखते हैं, और हम इसे शीर्षक, जोहानिन पत्र, मसीह में जीवन को संतुलित करना के अंतर्गत कर रहे हैं।

और यह 1, 2, और 3 जॉन में धार्मिक विषयों पर एक नज़र का दूसरा भाग है, और मैं उन विषयों को शीर्ष पर, शीर्षक में रखने जा रहा हूँ, और अब तक हमने ईश्वर को देखा है, हमने प्रेम को देखा है, और हमने मुख्य धार्मिक विषयों के रूप में जानने को देखा है। ये तीन शब्द हैं जो जॉन के पत्रों में सबसे अधिक बार आते हैं। ईश्वर पहला सबसे अधिक बार आने वाला शब्द है, क्रिया मैं प्यार करता हूँ दूसरा सबसे अधिक बार आने वाला शब्द है, और अनुभवात्मक तरीके से जानने के लिए क्रिया, आम तौर पर, तीसरा सबसे अधिक बार आने वाला शब्द है।

चौथा सबसे ज़्यादा बार आने वाला शब्द है मेनो, यानी मैं रहता हूँ या बना रहता हूँ। यह पहले यूहन्ना में दो दर्जन बार, दूसरे यूहन्ना में तीन बार आता है। और हम देख रहे हैं कि यूहन्ना मरने वाले विश्वासियों से क्या कहता है, एक तरफ़, और साथ ही उन लोगों से भी जो ढीले हैं, या जिन्हें हम रक्तहीन धर्म वाले लोग कह रहे हैं, एक ऐसा धर्म जो उन्हें अपने विश्वास के लिए मरने के लिए नहीं कहता।

और मुझे यहाँ अपनी स्क्रीन को थोड़ा सा बदलने दें, ताकि हम सब कुछ एक पेज पर देख सकें। बचे रहने के शीर्षक के अंतर्गत मरने वाले विश्वासियों के लिए जॉन का संदेश यह है कि परमेश्वर का वचन हमें बचाता है। परमेश्वर का वचन जो हमें शुरू से ही बचाता है, वह हमारे अंदर अपनी जीवित उपस्थिति प्रदान करता है।

इसलिए, परमेश्वर का वचन हमें आरंभ में बचाता है, लेकिन फिर हमारे साथ परमेश्वर की स्थायी उपस्थिति होती है, और वह जीवित वचन हमें किसी भी और सभी परिस्थितियों में पुत्र और पिता के करीब रखता है। 1 यूहन्ना 2:24 में यूहन्ना अपने पाठकों से कहता है, "जो तुमने आरंभ से सुना है, वह तुम में बना रहे, या तुम में बना रहे। और निश्चित रूप से, जो तुम सुनते हो वह एक संदेश या एक शब्द है।

यदि आपने जो शुरू से सुना है वह आप में बना रहता है, तो आप भी पुत्र और पिता में बने रहेंगे। इसलिए, परमेश्वर वचन के माध्यम से हमारे पास आता है, और वचन के लिए खुद को खोलने के माध्यम से, हम परमेश्वर पिता और पुत्र के साथ एक हो जाते हैं। तो यह एक ऐसा संदेश है जो उन लोगों के लिए बहुत मायने रखता है जो उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं, क्योंकि यह उन्हें आश्वस्त करेगा कि उन्हें परेशानी में डालने वाली बात, जो वचन या सुसमाचार संदेश के माध्यम से यीशु मसीह में विश्वासियों के रूप में उनकी स्थिति है, वह वचन जो उन्हें प्रभु के साथ जोड़ता है और

उन्हें उन लोगों के साथ अलोकप्रिय बनाता है जो शायद ईसाई समुदाय को खत्म करने या ईसाई विश्वासियों को सताने की कोशिश कर रहे हैं, वह वचन उनमें बना रहता है, और बदले में वे पुत्र और पिता में मौजूद होते हैं।

यह एक तरह से रहस्यपूर्ण है, लेकिन आप जानते हैं कि ईश्वर एक आत्मा है, और ईश्वर हमारी समझ और ज्ञान से परे है। वह किसी तरह का कोई सरल समीकरण या कोई बड़ा ब्रह्मांडीय व्यक्ति नहीं है। आप जानते हैं कि ईश्वर एक शाश्वत, पारलौकिक प्राणी है।

लेकिन हम और हमारी सीमाएं और हमारी सृष्टि और यहां तक कि हमारे पाप भी वचन के द्वारा शुद्ध हो जाते हैं, और वह वचन बना रहता है और अपना काम करता है और हमें परमेश्वर के साथ जोड़ता है। यही विश्वासियों के मरने का संदेश है। आपके पास आशा है।

ढीले लोगों के लिए संदेश यह है कि वर्तमान युग में, कई ईसाई, उद्धारण चिह्नों में, पवित्रशास्त्र की स्पष्ट शिक्षा, मसीह की शिक्षा से दूर जाने का फैसला करते हैं। और यह परमेश्वर के साथ एक उद्धारक संबंध की कमी को दर्शाता है। और यह विशेष रूप से सच है यदि यह विचलन मसीह के सिद्धांत से संबंधित है।

यूहन्ना 2 पद 9 में कलीसिया को लिखता है, जो कोई आगे बढ़ता है और मसीह की शिक्षा में नहीं रहता, उसके पास परमेश्वर नहीं है। जो कोई शिक्षा में रहता है, उसके पास पिता और पुत्र दोनों हैं। तो, यहाँ रहने की केंद्रीयता पर ध्यान दें।

ढीले लोगों के लिए पालन करना या न पालन करना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमेश्वर के वचन में बने रहना हमेशा एक चुनौती होती है। आप जानते हैं कि हमारा गुरुत्वाकर्षण खिंचाव बहुत ढीला है। यह बहुत आलसी है।

यह सामान्यता है। और परमेश्वर हमें बुलाता है, आप जानते हैं, उसके साथ बढ़ती हुई संगति के लिए, और बढ़ती हुई परिपक्वता के लिए, और सेवा में बढ़ती हुई प्रभावशीलता के लिए, और बढ़ती हुई प्रसन्नता के लिए, और बढ़ती हुई खुशी के लिए, और बढ़ते हुए प्रेम के लिए। बहुत सी अच्छी और महान चीजें हैं जिनका हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ आनंद लेते हैं, और जिनका हम अन्य विश्वासियों के साथ आनंद लेते हैं।

और हमें उसमें बने रहने के लिए आमंत्रित किया जाता है। लेकिन अगर हम उसमें बने नहीं रहते हैं, तो हम आगे बढ़ जाते हैं, और मैं इसे थोड़ा और स्पष्ट करूँगा जब हम 2 जॉन को देखेंगे। अगर हम आगे बढ़ते हैं और हम मसीह की शिक्षा में बने नहीं रहते हैं, तो हमारे पास परमेश्वर नहीं है, चाहे हमारा दावा कुछ भी हो।

इसलिए बने रहना महत्वपूर्ण है। जहाँ से हमने शुरुआत की थी, वहीं बने रहना, जो कि यीशु मसीह का क्रूस पर चढ़ाया जाना और फिर जी उठना, और उन पर विश्वास करना, और फिर उनके साथ जीवन में चलना, और उस रिश्ते, और उस सेवा, और उस आराधना को विकसित करना था। पाँचवाँ सबसे ज़्यादा इस्तेमाल होने वाला शब्द है कोस्मोस, दुनिया, या सृजित व्यवस्था।

यह 1 यूहन्ना में 23 बार आता है। मरने वाले विश्वासियों के लिए उस शब्द में संदेश यह है कि दुनिया, दुनिया, स्थायी लगती है। दुनिया बहुत ही भयानक और निर्दयी हो सकती है।

आपको कोई दया नहीं आती। और अगर मैं उस देश के बारे में सोचूं जहां मुझे उत्पीड़न का सबसे ज़्यादा अहसास है, तो वह सूडान होगा, जहां मैंने, आप जानते हैं, कुल मिलाकर कई महीने बिताए। और वहां अक्सर बहुत गर्मी होती है, और यह बहुत असुविधाजनक है।

और जब मैं वहां था, तो बहुत से लोगों के पास खाने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं था। यहां तक कि साफ पानी भी अक्सर मिलना मुश्किल था। और इसलिए अगर आपको सताया जा रहा है, तो ऐसा लग सकता है कि कोई उम्मीद ही नहीं है।

दुनिया आपसे कहीं बड़ी है। यह बहुत ही प्रभावशाली और निराशाजनक है, खासकर अगर आप एक युवा व्यक्ति हैं। अगर आप एक ऐसे देश में ईसाई हैं जहाँ ईसाइयों का उत्पीड़न होता है, तो अक्सर आपके पास रोजगार की संभावनाएँ नहीं होती हैं, आपके पास शिक्षा की संभावनाएँ नहीं होती हैं, हर कोई विश्वविद्यालय जा रहा है, और आपको तब तक विश्वविद्यालय जाने की अनुमति नहीं दी जा सकती जब तक कि आप प्रमुख धर्म में धर्मांतरण न कर लें।

इसलिए दुनिया स्थायी लग सकती है, लेकिन जॉन का संदेश यह है कि दुनिया गुज़र रही है, और जो लोग परमेश्वर की अपरिवर्तनीयता का सम्मान करते हैं, वे उसकी अपरिवर्तनीय उपस्थिति में जीवन पाएँगे। दुनिया इसे नहीं समझती है, और यह उन लोगों से नफरत करती है जिनका सर्वोच्च लक्ष्य परमेश्वर की इच्छा है, न कि मानवीय आकांक्षाएँ। इसलिए इस विरोध की अपेक्षा करें।

परमेश्वर बदला चुकाएगा। वह आपकी वफ़ादारी का बदला चुकाएगा, और वह दुनिया के विरोध का भी बदला चुकाएगा। इसलिए, 1 यूहन्ना 2:17.

दुनिया अपनी इच्छाओं के साथ खत्म हो रही है, और यह शब्द अक्सर यौन इच्छा की दिशा में आगे बढ़ता है। इसे उस तक सीमित नहीं होना चाहिए, लेकिन इसमें निश्चित रूप से वह भी शामिल है। और दुनिया के अधिकांश हिस्सों में, बहुत सारा जीवन, बहुत सारी ऊर्जा कामुक सुख के इर्द-गिर्द केंद्रित है।

मैंने हाल ही में इसकी जाँच नहीं की है, लेकिन पिछले कुछ सालों में, मैंने बार-बार सुना है कि इंटरनेट पर सबसे ज़्यादा गूगल पर जिस शब्द को खोजा जाता है, वह है सेक्स। और कुछ लोगों के लिए, यह, आप जानते हैं, उनके जीवन में मुख्य प्रेरक शक्तियों में से एक है। जॉन कहते हैं कि दुनिया अपनी इच्छाओं के साथ खत्म हो रही है, लेकिन जो कोई भी परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह हमेशा के लिए बना रहता है।

ईश्वर मसीह के माध्यम से दुनिया में आया है, और उसने अपने वचन के माध्यम से दुनिया से बात की है, लेकिन ईश्वर स्वयं पारलौकिक है। ईश्वर अंतरिक्ष, समय और पदार्थ से परे मौजूद है। और उसकी इच्छा दुनिया की इच्छा नहीं है।

दुनिया की अपनी दिशाएँ, अपनी चाहत और अपने लक्ष्य हैं। और परमेश्वर इस दुनिया को छुड़ाना चाहता है, और वह इसे छुड़ाने के लिए काम कर रहा है। लेकिन जब हम मसीह को जानते हैं, तो हम परमेश्वर और उसके इरादों के साथ एक रिश्ते से परिचित होते हैं, जो हमारे इरादों को प्रभावित करता है।

यह हमारे जीवन की दिशा को सभी तरह से बदल देता है। लेकिन एक बात जो हमारे जीवन में आती है, और फिर से यह विश्वासयोग्य लोगों के लिए है, 1 यूहन्ना 3:13, हे भाइयों, इस बात से आश्चर्यचकित न हों कि संसार तुमसे घृणा करता है। और यूहन्ना के सुसमाचार में यीशु इस बारे में बात करते हैं, और हम इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में कई बार देखते हैं जब मसीहियों को सताया जाता है।

तो, दुनिया के संबंध में, यह जॉन का संदेश है। दुनिया खत्म हो रही है, और आपको सृजित व्यवस्था के विरोध की उम्मीद करनी चाहिए। ठीले लोगों के लिए संदेश यह है कि दुनिया धार्मिक विकल्पों और गलत बयानों से भरी हुई है।

दुनिया इन आत्माओं, इन आवेगों, इन दृढ़ विश्वासों, इन विश्वासों को देती है, यह इन आत्माओं और उनके भविष्यवक्ताओं को सुनने का मौका देती है। आप बहुत सी वेबसाइट पर जा सकते हैं और इस बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं कि अभी लोगों को क्या प्रभावित कर रहा है? अभी सबसे ज्यादा हिट क्या हो रहा है? और जॉन का संदेश है: धार्मिक विकल्पों और धार्मिक गलत बयानों में पड़ने से सावधान रहें। 1 जॉन 4.1, प्रिय, हर आत्मा पर विश्वास मत करो, बल्कि आत्माओं को परखो कि वे परमेश्वर की ओर से हैं या नहीं।

क्योंकि बहुत से झूठे भविष्यवक्ता संसार में चले गए हैं। आप जानते हैं, ऐसे बहुत से व्यक्ति हैं जो विचारों, आवेगों और विश्वासों से भरे हुए हैं जो लोगों को सच्चे और जीवित परमेश्वर की ओर नहीं ले जाएँगे। वह 1 यूहन्ना 4.5 में आगे कहता है, वे, गैर-बाइबिल विश्वास वाले ये लोग, संसार से हैं। इसलिए, वे संसार से बोलते हैं, और संसार उनकी बात सुनता है।

परमेश्वर के लोग वे लोग हैं जिन्होंने परमेश्वर के वचन को सुना है, और वह वचन उन्हें परमेश्वर के साथ एक रिश्ते में ले जाता है, और यह दुनिया में उनकी स्थिति को बदल देता है। आप यह भी कह सकते हैं कि वे दूसरी दुनिया में रहते हैं। वे एक साथ दो दुनियाओं में रहते हैं।

एक है परमेश्वर के राज्य की दुनिया, और फिर दूसरी है, खैर, हम सभी जानते हैं कि दुनिया क्या है, लेकिन 1 यूहन्ना संघर्षपूर्ण दुनियाओं के इस धार्मिक विषय से भरा हुआ है। यूहन्ना के पत्रों में एक और महत्वपूर्ण धार्मिक अवधारणा और शब्द है बेटा। यह 22 बार आता है।

ईएसवी में इसे हमेशा बड़े अक्षरों में लिखा जाता है, जिसका मतलब है कि यह यीशु के बारे में बात कर रहा है। जॉन के पत्रों में यीशु या मसीह के लिए मुख्य शब्द पुत्र है। मरने वाले विश्वासियों के लिए संदेश यह है कि पुत्र पर विश्वास करने से अनंत जीवन का आश्वासन मिलता है, क्योंकि वह सच्चा परमेश्वर और अनंत जीवन है।

अब, जब हम अनन्त जीवन के बारे में बात करते हैं तो यह हमेशा बहुत सावधानी से याद रखना चाहिए कि यह केवल स्वर्ग के बारे में बात नहीं कर रहा है। यह केवल जीवन की अवधि के बारे में बात नहीं कर रहा है, जो कि भविष्य में अनंत काल है। मेरा मतलब है, यह एक अद्भुत सत्य है, लेकिन जिस तरह से जॉन के सुसमाचार में अनन्त जीवन प्रस्तुत किया गया है, वह केवल युगांतशास्त्रीय नहीं है।

यह सिर्फ अंत से संबंधित नहीं है, बल्कि इसे कभी-कभी साकार भी कहा जाता है, कि अब जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि हुई है। यह यहाँ और अभी मसीह की उपस्थिति के माध्यम से परिवर्तित हो गया है, इसलिए हम सिर्फ, आप जानते हैं, अनंत जीवन का आनंद लेने के लिए मरने का इंतज़ार नहीं कर रहे हैं। अनंत जीवन का फल पहले से ही इस जीवन में देखा जा सकता है, और पुत्र पर विश्वास करने से उस जीवन का आश्वासन मिलता है।

यह गवाही है, यह 1 यूहन्ना 5 में, पद 11 से शुरू होता है। यह गवाही या साक्ष्य है कि परमेश्वर ने हमें अनन्त जीवन दिया है, और यह जीवन उसके पुत्र में है। मैं ये बातें तुम्हें लिखता हूँ जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, ताकि तुम जान सको कि तुम्हारे पास अनन्त जीवन है।

यह जीवन जो आप जी रहे हैं, वह परमेश्वर के साथ उस जीवन की पूर्वसूचना है जो आप आने वाले युग में जीएँगे। कुछ आयतों के बाद 5:20 में यूहन्ना लिखता है, "हम जानते हैं कि परमेश्वर का पुत्र आ गया है, और उसने हमें समझ दी है।" यहाँ ज्ञान के लिए एक असामान्य शब्द है।

उसने हमें समझ दी है ताकि हम उसे जान सकें जो सच्चा है। मुझे लगता है कि आप इस शब्द का अनुवाद "समझ" के रूप में करेंगे। उसने हमें अंतर्दृष्टि दी है।

यह सिर्फ सामान्य ज्ञान नहीं है, जैसे कि आप अपने लॉनमूवर को कैसे जोड़ते हैं, या आप एक पंचर टायर को कैसे ठीक करते हैं, लेकिन यह अंदरूनी जानकारी है, ताकि हम उसे जान सकें जो सच्चा है, और हम उसमें हैं जो सच्चा है, उसके बेटे, यीशु मसीह में। वह सच्चा परमेश्वर और अनन्त जीवन है। इसलिए, जॉन के पत्रों में पुत्र के लिए संदेश व्यापक है क्योंकि यह 22 बार आता है, लेकिन मरने वाले वफादार लोगों के लिए संदेश के संदर्भ में, आप जानते हैं, अगर मृत्यु का खतरा है, तो मुद्दा जीवन है।

मैं अपने जीवन के बारे में क्या करूँ? क्योंकि यह खतरे में है, और पुत्र अनंत जीवन का आश्वासन देता है, क्योंकि यह पुत्र ही है जो जीवन देता है, और पुत्र ही हमें ईश्वर से जोड़ता है, और वास्तव में, जैसा कि यहाँ कहा गया है, वह सच्चा ईश्वर और अनंत जीवन है। ढीले लोगों के लिए संदेश यह है कि उद्धार करने वाला विश्वास, ईश्वर में ऐसा विश्वास जो आपको मुक्ति दिलाता है, कुछ धार्मिक विचारों के प्रति निष्क्रिय सहमति नहीं है। यह सिर्फ यह कहना नहीं है कि मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ।

यह किसी नैतिक संहिता का अनुपालन नहीं है। मुझे नहीं पता कि मैंने कितनी बार लोगों को यह कहते हुए सुना है, ठीक है, मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ और मैं एक अच्छा जीवन जीने की कोशिश करता हूँ, या मुझे लगता है कि मैंने दस आज्ञाओं का पालन किया है, जो किसी ने नहीं

किया है, लेकिन लोग ऐसा कहेंगे, या मैं अन्य लोगों की तरह बुरा नहीं हूँ, ऐसा कुछ। यह विश्वास को बचाने वाला नहीं है।

यह ईश्वर पिता की एक परिभाषित अभिव्यक्ति के रूप में यीशु के प्रति अस्वीकृति या उदासीनता या शत्रुता है। अगर हम सिर्फ धार्मिक विचारों को स्वीकार करते हैं, या हम सिर्फ एक नैतिक संहिता का पालन करते हैं, या हम सिर्फ यह सोचते हैं कि हम दूसरे लोगों की तरह बुरे नहीं हैं, तो यह यीशु को अस्वीकार करना है। हमें लगता है कि हम इस तरह से बच गए हैं, या यह यीशु के प्रति उदासीनता है, या यहाँ तक कि यीशु के प्रति शत्रुता भी है।

यीशु और उसके राजा, या मसीह, या मसीहा के रूप में दर्जे का विरोध करना, ईश्वर को नकारना है। झूठा कौन है, सिवाय उस व्यक्ति के जो यीशु को मसीह मानने से इनकार करता है? यह मसीह विरोधी है जो पिता और पुत्र को नकारता है। पुत्र को नकारना पिता को नकारना है।

2:23, जो कोई पुत्र को अस्वीकार करता है, उसके पास पिता नहीं है। और, बेशक, जब वह कहता है कि वह पुत्र को अस्वीकार करता है, तो वह यीशु की पूर्णता के बारे में बात कर रहा है, यीशु जो करने आया था, और जो उसने किया। यीशु जो अभी परमेश्वर, पिता के दाहिने हाथ पर है, परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थता कर रहा है।

जो कोई भी पुत्र को स्वीकार करता है, उसके पास पिता भी है। मुझे याद है कि कई साल पहले, मेरी मुलाकात किसी ऐसे व्यक्ति से हुई थी, जो सोचता था कि उसके पास उपचार का वरदान है, और उसने कहा कि उसके पास कैंसर से लोगों को ठीक करने का वरदान है। और इसलिए इस व्यक्ति ने मुझे अपनी कहानी बताई क्योंकि वे परेशान थे, क्योंकि पिछले कई सालों में वे कई बार चर्च गए थे, और उनके पास उपचार का वरदान था, और वे देश के अलग-अलग हिस्सों में जा रहे थे।

यह स्कॉटलैंड में हुआ। और, आप जानते हैं, वे किसी पर हाथ रखते थे और उसके लिए प्रार्थना करते थे, और उन्होंने कहा कि, आप जानते हैं, यह वास्तव में गर्म महसूस होता था, और फिर वह व्यक्ति कैंसर से ठीक हो जाता था। लेकिन उन्होंने कहा कि चर्च में कुछ साल रहने के बाद, उन्हें बाहर निकाल दिया गया, और उन्हें समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों हुआ।

और इसलिए उनके पास मेरे लिए एक सवाल था। मैं धर्मशास्त्र का छात्र था, और हमने बातचीत शुरू की। और इसलिए उन्होंने मुझे एक लंबी, लंबी कहानी सुनाई, और, आप जानते हैं, यह मुझे चर्च के दुरुपयोग की तरह लगा कि उसके पास यह उपहार था और लोग उसे चर्च से बाहर कर रहे थे।

लेकिन वह कहता रहा, मैं लोगों को भगवान के पास लाना चाहता हूँ। मैं अपनी चिकित्सा का उपयोग लोगों को भगवान के पास लाने के लिए करना चाहता हूँ। और मैंने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, चलो इस बात की तह तक पहुँचते हैं।

मैंने कहा, आप आते रहते हैं, लोगों को परमेश्वर के पास लाते रहते हैं। यह मुझे इस आयत के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। मसीह, यह 1 पतरस 3:18 है, मसीह भी एक बार सभी के पापों के

लिए मरा, यानी एक बार हमेशा के लिए, धर्मी, एकवचन, धर्मी व्यक्ति, अधर्मियों, अनेकों के लिए, हमें परमेश्वर के पास लाने के लिए।

शरीर में मारे जाने के बाद भी आत्मा में जीवित कर दिया गया। मैंने उसे वह आयत सुनाई और पूछा, यह लोगों को परमेश्वर के पास लाने से कैसे संबंधित है? और उसका चेहरा बदल गया और उसने कहा, यह बाइबल का एक हिस्सा है जिससे मैं सहमत नहीं हूँ। आप जानते हैं, वह यह नहीं मानता था कि लोग पापी थे।

वह यह नहीं मानता था कि वह पापी है। उसे विश्वास था कि उसके पास ईश्वर की शक्ति है, और मेरा मतलब है, अगर आपके पास ईश्वर की शक्ति है जो कैंसर को ठीक कर सकती है, तो आप ईश्वर के साथ कैसे गलत हो सकते हैं? इसलिए, वह मसीह के क्रूस से बिल्कुल भी सहमत नहीं था, और जब हमारी बातचीत में यह बात सामने आई तो वह वास्तव में बहुत ही शत्रुतापूर्ण था। हम बातचीत कर रहे थे, बस, जब तक मैंने उसकी उपचार शक्ति के बारे में उसकी गवाही सुनी, वह लोगों को ईश्वर के पास ला रहा था।

लेकिन जब परमेश्वर को उस पुत्र के रूप में परिभाषित किया गया जो हमें परमेश्वर के पास लाने के लिए मर गया, तो यह डरावना हो गया, क्योंकि वास्तव में वह एक पुलिसकर्मी था, और जब कोई पुलिसकर्मी आप पर क्रोधित होता है तो यह डरावना होता है। तो, यह पुत्र के संबंध में परमेश्वर का संदेश है जो लापरवाह लोगों के लिए है। यदि आप पुत्र को स्वीकार नहीं करते हैं, तो आपके पास पिता नहीं है, और यदि आपके पास परमेश्वर की ज्योति और भलाई नहीं है, तो आपके पास अंधकार और अंधकार का खतरा होगा।

प्रेम दूसरा सबसे अधिक बार इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है, और इस अगापे शब्द के संदर्भ में, 1 यूहन्ना में 18 बार, 2 यूहन्ना में 2 बार, 3 यूहन्ना में 1 बार, यहाँ मरने वाले विश्वासियों के लिए यूहन्ना का संदेश है। परमेश्वर का प्रेम विश्वासियों के लिए शरण का स्थान है। उसका प्रेम हमें उसके न्याय के भय से ऊपर उठाता है, क्योंकि उसका प्रेम हम में परिपूर्ण है।

मानवविज्ञानी हमें बताएंगे कि सार्वभौमिक मानवीय अनुभव अपराधबोध है, और विभिन्न संस्कृतियों में अपराधबोध से निपटने के अलग-अलग तरीके हैं, खासकर अपराधबोध से इनकार, लेकिन यह मौजूद है। और अगर आप विमान दुर्घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं, तो मुझे फ्लाइंग मैगज़ीन नामक एक पत्रिका मिलती है, और अक्सर विमान दुर्घटनाओं की रिपोर्ट होती है, और जब वे उड़ान रिकॉर्ड करते हैं, जब उन्हें विमान दुर्घटना में वह ब्लैक बॉक्स मिलता है, और वे पता लगाते हैं कि पायलट ने सभी के मरने से ठीक पहले क्या कहा था। यह आश्चर्यजनक है कि इन पायलटों के अंतिम शब्द कितनी बार होते हैं, हे भगवान, या मेरे भगवान।

अचानक, जो पुरुष या महिलाएँ धार्मिक नहीं भी हो सकती हैं, जब मरने की बात आती है, तो उन्हें अचानक ईश्वर के बारे में जागरूकता होती है, संभावित न्याय के बारे में जागरूकता, कि जब मैं मरूँगा तो क्या होगा। लेकिन हमने अभी देखा कि पुत्र के माध्यम से उद्धार का आश्वासन है, लेकिन उस आश्वासन का एक कारण यह है कि पुत्र को जानना हमें ईश्वर के साथ हमारे रिश्ते में लाता है, जिसे 1 यूहन्ना 4 में प्रेम कहा गया है। यह उनकी विशिष्ट विशेषताओं में से एक है। ईश्वर

प्रेम है, और वह प्रेम हमें ईश्वर के न्याय के डर से ऊपर उठाता है, क्योंकि वह प्रेम हमारे भीतर परिपूर्ण है।

तो, हम जान गए हैं, मैं 1 यूहन्ना 4 को उद्धृत कर रहा हूँ, हम जान गए हैं और उस प्रेम पर विश्वास कर लिया है जो परमेश्वर का हमारे प्रति है। सिर्फ यह विश्वास ही नहीं करना है कि यह सच है, बल्कि इसे जानना है और इस पर भरोसा करना है। विश्वास के लिए शब्द भरोसा भी हो सकता है।

परमेश्वर प्रेम है, और जो कोई उसमें बना रहता है, उसमें वह वचन है, परमेश्वर में वह वचन है, परमेश्वर उसमें बना रहता है। इसी से प्रेम हमारे बीच सिद्ध हुआ, ताकि हमें न्याय के दिन के लिए भरोसा हो। क्योंकि जैसा वह है, वैसे ही हम भी इस संसार में हैं।

जैसे वह है, वैसे ही हम भी इस दुनिया में हैं। ईश्वर के साथ एकता है। ईश्वर आश्वस्त है, ईश्वर प्रेम से भरा है, ईश्वर करुणा से भरा है, और जैसे वह है, वैसे ही हम इस दुनिया में हैं।

प्रेम में कोई डर नहीं होता, लेकिन पूर्ण प्रेम भय को दूर भगा देता है, क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है, और जो कोई भय करता है, वह प्रेम में पूर्ण नहीं हुआ है। यदि हम प्रेम में पूर्ण हो चुके हैं, तो जॉन कह रहा है, तो यह हमें न्याय के भय से मुक्त कर देता है, जो अन्यथा हमारे पास हो सकता है। यह विश्वासयोग्य मरने वालों के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि विश्वासयोग्य मरने वाले, निस्संदेह, मेरा मतलब है कि कोई भी मरना नहीं चाहता है, और लोग सोच सकते हैं कि उनके साथ बुरी चीजें हो रही हैं, कि उन्हें गिरफ्तार किया जा रहा है, उनकी तलाश की जा रही है, उनके घर को जला दिया गया है, वे सोच सकते हैं कि यह ईश्वर का न्याय है, और कई बार उत्पीड़न ईश्वर का न्याय नहीं होता है।

उत्पीड़न ऐसे कारणों से हो रहा है जिन्हें हम समझ नहीं पाते, लेकिन ईश्वर के प्रेम में, हमें ईश्वर के न्याय का कोई डर नहीं है। यदि आप वेबसाइट पढ़ते हैं, या यदि आप दुनिया के किसी ऐसे हिस्से में रहते हैं जहाँ बहुत अधिक उत्पीड़न होता है, तो ऐसी वेबसाइटें हैं जिन्हें आप पढ़ सकते हैं, जैसे वॉयस ऑफ़ द मार्टियर्स, और आप अक्सर उन लोगों की गवाही पढ़ सकते हैं जिनके घर जला दिए गए हैं, या जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया है, या जिन लोगों को प्रताड़ित किया गया है, और अक्सर ये गवाही प्रेम की भावना से भरपूर होती हैं। दुख और आघात की भावना होगी, लेकिन अक्सर यह भावना भी होगी कि, मैं ईश्वर के साथ चल रहा हूँ, मैं मसीह में अपने विश्वास के साथ चल रहा हूँ, मुझे पता है कि वह मुझसे प्यार करता है, वह मेरे साथ है, भले ही मेरे साथ ऐसा हुआ हो।

जॉन के पास ढीले लोगों के लिए एक संदेश है। हम अपनी आत्माओं से समझौता करते हैं, भले ही हम मसीह में विश्वास का दावा करते हों, अगर हमारा प्यार वास्तव में पिता के अलावा या उससे ज़्यादा किसी और चीज़ के लिए है, जिसने बेटे को भेजा। यह पुराने नियम में पहली आज्ञा की एक तरह से नए नियम की प्रतिध्वनि है, मेरे सामने या मेरे साथ कोई अन्य ईश्वर न रखना।

जॉन कहते हैं, दुनिया से प्यार मत करो, दुनिया या दुनिया की चीज़ों से अपना लगाव मत रखो। अगर कोई दुनिया से प्यार करता है, तो उसमें पिता का प्यार नहीं है। और इसलिए, आप जानते हैं, यह एक काला-सफेद कथन है।

हमें याद रखना चाहिए कि बाइबल कहती है, परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, यूहन्ना 3:16। यदि परमेश्वर ने किसी अर्थ में जगत से प्रेम किया, तो कुछ अर्थों में परमेश्वर के लोग संसार के प्रति स्नेह और पुष्टि व्यक्त कर सकते हैं। लेकिन यूहन्ना कह रहा है, संसार और संसार की वस्तुओं पर अपना स्नेह इस तरह न लगाओ कि वे परमेश्वर और पुत्र के प्रति तुम्हारे स्नेह के बराबर हों।

यदि कोई संसार से प्रेम करता है, तो इस अंतिम अर्थ में, पिता का प्रेम उसमें नहीं है। पाप एक और प्रमुख शब्द है, जो यूहन्ना के पत्र में 17 बार आता है, जो कि पहला पत्र है। मरने वाले विश्वासियों के लिए उनका संदेश यह है कि विश्वासी आशा के साथ मृत्यु का सामना करते हैं, क्योंकि वे अपने पापों की क्षमा जानते हैं।

परमेश्वर ने पाप के विरुद्ध अपने क्रोध को शांत करने के लिए अपने पुत्र को भेजकर अपना प्रेम प्रदर्शित किया। मसीह में दूसरों के साथ संगति दुख में शक्ति प्रदान करती है। यूहन्ना कहता है, यदि हम ज्योति में चलें, जैसा वह ज्योति में है, तो हम एक दूसरे के साथ संगति रखते हैं।

और उसके बेटे यीशु का लहू हमें सभी पापों से शुद्ध करता है। बाद में, 1 यूहन्ना 4:10 कहता है, "इसमें प्रेम है। यह नहीं कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया, बल्कि इसमें कि उसने हमसे प्रेम किया।"

यह बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि हर इंसान जो सामान्य है, सामान्य बुद्धि, सामान्य जीवन, हम सभी प्यार जानते हैं। मेरा मतलब है, पालतू जानवर प्यार जानते हैं। हम कुत्तों से प्यार करते हैं, हम बिल्लियों से प्यार करते हैं, हम बच्चों से प्यार करते हैं, हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं, आप जानते हैं, हर कोई प्यार जानता है।

लेकिन यह एक विशेष प्रेम है, इसमें प्रेम यह नहीं है कि हमने परमेश्वर से प्रेम किया है, बल्कि यह है कि उसने हमसे प्रेम किया है, और अपने पुत्र को हमारे पापों के प्रायश्चित के लिए भेजा है। उसने क्रूस पर हमारे पापों की सजा चुकाई। इसलिए, हमारे पास आशा है, क्योंकि पुत्र में परमेश्वर ने हमारे पापों से निपटा है।

हमें पापों की क्षमा मिली है। प्रायश्चित का यही अर्थ है। हमारे पापों की सज़ा यीशु ने भुगती।

यहाँ पर उन लोगों के लिए एक संदेश है जो लापरवाही करते हैं। कुछ लोग जानबूझकर पाप करते हैं, यह सोचकर कि उन्हें हमेशा माफ़ी मिल सकती है। यीशु हमारे जीवन में पाप को कम करने के लिए प्रकट हुए, न कि अंतहीन नरमी से पाप को बढ़ावा देने के लिए।

1 यूहन्ना 3:4 और 5 में कहा गया है, "जो कोई पाप करता है, वह अधर्म भी करता है। पाप अधर्म है। और इन आयतों और इन शब्दों के बारे में बहुत विवाद है, लेकिन मैं देखूँगा कि यहाँ अधर्म के लिए शब्द एनोमिया है।"

नामास कानून है, और एनोमिया कोई कानून नहीं है। और यह संभवतः पुराने नियम के समय में टोरा और नोमोस के विचार से संबंधित है, और ग्रीक पुराने नियम में सैकड़ों बार, जब परमेश्वर के लोग सीमा से बाहर हो जाते थे, खासकर मूर्तिपूजा के मामले में, इसे एनोमिया कहा जाता था। और यह पाप है जो हम अनजाने में कर सकते हैं।

याकूब कहता है कि हम सभी कई तरह से ठोकर खाते हैं। पौलुस कहता है कि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। इसलिए हम मनुष्य होने के नाते पाप करने जा रहे हैं।

लेकिन फिर पाप है एनोमिया। परमेश्वर के विरुद्ध समर्पित विद्रोह का पाप है। हर कोई जो पाप करने की आदत बनाता है, वह अधर्म का अभ्यास कर रहा है।

पाप अधर्म है। आप जानते हैं, वह पापों को दूर करने के लिए प्रकट हुआ, और उसमें कोई पाप नहीं है। इसलिए जो लोग ढीले हो सकते हैं और जो अपने पापों में डूबे हुए हैं और हम कह रहे हैं, ठीक है, आप जानते हैं, मैं यीशु में विश्वास करता हूँ और मेरा मानना है कि उसकी कृपा अंतहीन है, इसलिए भले ही मैं आदतन, बार-बार पाप कर रहा हूँ, मुझे बस अपने पाप को स्वीकार करना है और फिर वह मुझे क्षमा करता रहेगा।

और यह एक खतरनाक खेल है। अंग्रेजी में, हम इसे चिकन का खेल कहते हैं। जब आप सड़क पर एक दूसरे की ओर गाड़ी चलाते हैं और देखते हैं कि कौन पहले मुड़ता है, तो आप भगवान के साथ चिकन का खेल नहीं खेलना चाहते और कहते हैं, ठीक है, मैं आप पर विश्वास करता हूँ, हाँ, आप मुझे पाप न करने के लिए कहते हैं, लेकिन मैं पाप करना जारी रखूँगा क्योंकि मुझे पता है कि मैं आप पर विश्वास करता हूँ और आप मुझे मना नहीं कर सकते।

इस तरह का विश्वास ईश्वर में वास्तविक विश्वास नहीं है। यहाँ 'नहीं' के लिए एक और शब्द है। पहले वाला शब्द 'गिनोस्को' था, जो आवृत्ति में तीसरा था।

यह ओइडा है, आवृत्ति में नौवां। और इस ज्ञान के संदर्भ में, यहाँ मरने वाले विश्वासियों के लिए जॉन का संदेश है। ईसाई आशा हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता की वापसी है, और वह दिन आएगा जब हम उसे उसकी महिमा में देखेंगे।

और यह आत्मविश्वास भरी उम्मीद विश्वासियों को परीक्षा और नुकसान के घंटों में सहारा देती है। 1 यूहन्ना 3:2, प्रिय, और यूहन्ना के पत्रों में प्रियजनों को नज़रअंदाज़ न करें। कुछ अनुवादों में मित्र शब्द का इस्तेमाल किया गया है, लेकिन प्रिय शब्द परमेश्वर के प्रेम और उसके दावे को दर्शाता है।

यह शब्द चुनाव के बहुत करीब है। आप जानते हैं, परमेश्वर अपने लोगों पर अपना स्नेह रखता है, और जो हमें जोड़ता है वह यह नहीं है कि हम दोस्त हैं। जो हमें जोड़ता है वह यह है कि परमेश्वर ने हमें अपना दोस्त बनाया है।

वह हमारा पिता बन जाता है, और हम भाई-बहन बन जाते हैं। हमारी एक नई पारिवारिक पहचान होती है। और जॉन, ईसाई समुदाय के नेता के रूप में, अपने प्रियतम को संबोधित करते हैं।

वह उन लोगों को संबोधित करता है जो मसीह में परमेश्वर के प्रेम को जानते हैं, और बेशक, वह उनमें से एक है। प्रिय, हम अभी परमेश्वर की संतान हैं, और हम क्या होंगे यह अभी तक प्रकट नहीं हुआ है। लेकिन हम जानते हैं कि वह प्रारंभिक शब्द गिनोस्को का उपयोग नहीं करता है, जो अधिक अनुभवात्मक है, क्योंकि आप इसे तब तक नहीं जान सकते जब तक यह घटित न हो जाए।

लेकिन ओइदा, आप स्पष्ट अवधारणा और दृढ़ विश्वास रख सकते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके जैसे होंगे, क्योंकि हम उसे वैसे ही देखेंगे जैसे वह है। कुछ ऐसा होगा जो जादुई होगा जब हम इस दुनिया से उस दुनिया में चले जाएंगे जहाँ मसीह के कारण, परमेश्वर की महिमा हमें बिना किसी मध्यस्थता के दिखाई देगी। अब हम उसकी महिमा को, आप जानते हैं, छिपी हुई देखते हैं।

यह बादलों के बीच से झांकने जैसा है। हम सूरज को देखते हैं। हम सुंदरता देखते हैं।

हम प्रेम देखते हैं। हम इस दुनिया में बहुत सी चीज़ें देखते हैं, सामान्य लोगों के रूप में और ईसाई लोगों के रूप में, लेकिन हम अभी तक परमेश्वर को वैसे नहीं देख पाए हैं जैसा वह वास्तव में है। लेकिन हम जानते हैं कि हम देखेंगे, और यह उन विश्वासियों के लिए एक संदेश है जो मर रहे हैं।

आपके पास वर्तमान में यह क्षमता है कि आप एक दृढ़ विश्वास को बनाए रखें जो आपको तब तक साथ देगा जब तक आप बदल नहीं जाते और आप उसके जैसे नहीं बन जाते। ढीले लोगों के लिए एक संदेश, मसीह की उपस्थिति का संकेत दूसरों के लिए उत्साही, आत्म-बलिदान प्रेम है। इस प्रेम की अनुपस्थिति का मतलब है कि एक व्यक्ति ने मसीह में जीवन नहीं पाया है।

1 यूहन्ना 3:14, हम जानते हैं कि हम मृत्यु से निकलकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं। इसलिए, यहाँ भी उसी तरह का ज्ञान है कि जब वह प्रकट होगा तो क्या होगा। हमारे पास वही दृढ़ विश्वास, वही स्तर, वही दृढ़ विश्वास की गुणवत्ता है कि हम मृत्यु से निकलकर जीवन में प्रवेश कर चुके हैं क्योंकि हम भाइयों से प्रेम करते हैं।

अब यह अनुभव को देखने से कहीं अधिक गहरा विश्वास है। यह ईश्वर के प्रेम के सिद्धांत और वास्तविकता का विश्वास है जो दिखाई देता है, खासकर, मुझे लगता है, जब आप समय के साथ पीछे देखते हैं। आप जानते हैं, मैं अब काफी उम्र का हो गया हूँ।

मैं दशकों पीछे देख सकता हूँ और विश्वासियों के बीच मेरे और मेरी पत्नी के प्रति, एक दूसरे के प्रति प्रेम देख सकता हूँ। हम पिछले कई सालों से कई चर्चों और कई जगहों पर गए हैं, और हमने देखा है कि ईसाई लोग पिछले कई सालों से कैसे जीते हैं। वे मृत्यु से निकलकर जीवन में आए हैं।

वे एक दूसरे से प्रेम करते हैं। जो प्रेम नहीं करता, वह मृत्यु में रहता है। उनके पास वह ज्ञान नहीं है, और उस ज्ञान की कमी का अर्थ है कि आप परमेश्वर को नहीं जानते।

दसवाँ, हम अपने बारहवें शब्द के करीब पहुँच रहे हैं, लेकिन यह दसवाँ शब्द है, सुनना। क्रिया में 14 बार सुनता हूँ। मरने वाले विश्वासियों के लिए यूहन्ना का संदेश यह है कि जब उसके लोग उसे पुकारते हैं तो परमेश्वर सुनता है।

हम उसके कान हैं। जब हम खतरे और ज़रूरत के समय प्रार्थना करते हैं, तो परमेश्वर हमारी बात सुनता है और अपनी शक्ति और उद्देश्य के अनुसार वह सबसे अच्छा, बुद्धिमानी भरा और सबसे प्रेमपूर्ण कार्य करता है। अगर हम मरने से डरते हैं, तो यह खतरा है।

यही ज़रूरी है। जॉन कहते हैं कि अगर हम उनकी इच्छा के अनुसार कुछ भी मांगते हैं, तो हमें उनके प्रति यही भरोसा है, वह हमारी सुनते हैं। अब, परमेश्वर सब कुछ सुनता है, लेकिन यह वचन है, या यह सत्य है, कि परमेश्वर हमारी सुनता है, और वह अपनी शक्ति और उद्देश्य के अनुसार सबसे अच्छा, बुद्धिमानीपूर्ण और सबसे प्रेमपूर्ण कार्य करने जा रहा है।

अगर हम जानते हैं कि हम जो कुछ भी मांगते हैं, वह हमारी सुनता है, तो हम जानते हैं कि हमारे पास कुछ ऐसे अनुरोध हैं जो हमने उससे मांगे हैं। हर ईसाई अनुरोध का सारांश प्रभु की प्रार्थना में इस प्रकार दिया गया है, तेरी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो, जैसे स्वर्ग में है। किसी भी ईसाई को परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध प्रार्थना नहीं करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए, इसलिए हम जो भी प्रार्थना कर रहे हैं, वह इस शीर्षक के अंतर्गत है, प्रभु, तेरा राज्य आए, तेरी इच्छा पृथ्वी पर भी पूरी हो, जैसे स्वर्ग में है।

आपका नाम पवित्र माना जाए। इसलिए, हमें पूरा भरोसा है कि अगर वह हमारी बात सुनेगा, तो हमें वह मिलेगा जो हम मांग रहे हैं। हम जो मांग रहे हैं वह उसकी इच्छा है।

प्रार्थना में सवाल यह है कि क्या वह हमारी बात सुनता है? क्या वह हमारी बात सुनता है? क्या इससे कोई फर्क पड़ता है? क्या प्रार्थना से कुछ होता है? और जॉन, वह इस भरोसे को बढ़ा रहा है कि परमेश्वर हमारी बात सुनता है। इसका मतलब यह नहीं है कि हम अपनी उँगलियों को हिलाकर उससे वह सब करवा सकते हैं जो हम करना चाहते हैं। इसका मतलब यह है कि वह इस बात पर विचार करता है कि हम उसके पास किस बात को लेकर जाते हैं, और अक्सर वह हमें उसकी दिशा में आगे बढ़ना सिखाता है और हमें सिखाता है कि हम उन चीज़ों को देखें जो वह हमारे लिए प्रार्थनाओं के माध्यम से चाहता है, आइए हम उस पर रोक लगाएँ और कुछ समय के लिए उसके बारे में सोचें।

प्रार्थना में लगे रहने से हम सुनते हैं, हम जानते हैं कि वह हमारी सुनता है। यूहन्ना का संदेश है कि परमेश्वर के प्रति प्रेम और परमेश्वर तथा उसकी आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। वे एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं।

परमेश्वर के प्रति प्रेम, परमेश्वर की आज्ञाकारिता। नैतिक मानकों को कम करना एक गलती है, यह मानते हुए कि एक प्रेममय परमेश्वर अपने लोगों के लिए अपनी इच्छा के अनुपालन के लिए उत्साही नहीं है। दूसरा यूहन्ना 6 कहता है, यह प्रेम है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार चलें।

यह वही आज्ञा है, जैसा कि तुमने शुरू से सुना है, ताकि तुम इस पर चलो। हम इस बारे में बाद में और बात करेंगे, विश्वास और प्रेम के बीच का संबंध और आज्ञाओं का पालन करना, लेकिन यही यहाँ संदेश है। जैसा कि तुमने शुरू से सुना है, तुम्हें इसके अनुसार जीना चाहिए।

आज्ञा, बेशक, 14 बार, मरने वाले विश्वासियों के लिए एक संदेश। परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति निष्ठा कई सामाजिक परिस्थितियों में दुर्व्यवहार और गिरफ्तारी का कारण बन सकती है, लेकिन विश्वासियों को मसीह में विश्वास करना और दूसरों से प्रेम करना ज़रूरी है। इस प्रेम में, परमेश्वर हमारे साथ है, और हम परमेश्वर के साथ हैं।

परमेश्वर अपनी पवित्र आत्मा का जीवित आश्वासन देता है। यह आज्ञा है कि हम उसके पुत्र यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करें और एक दूसरे से प्रेम करें, जैसा कि उसने हमें आज्ञा दी है। जो कोई उसकी आज्ञाओं को मानता है, वह परमेश्वर में बना रहता है और परमेश्वर उसमें बना रहता है, और इससे हम जानते हैं कि वह उस आत्मा के द्वारा जो उसने हमें दी है, हम में बना रहता है।

यह उन लोगों के लिए संदेश है जो मसीह के प्रति वफ़ादार हैं और जो इसके लिए दंड भुगत सकते हैं। लापरवाह लोगों के लिए संदेश यह है कि मसीह में विश्वास सीखने और उसकी आज्ञाओं को मानने की इच्छा पैदा करता है क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाएँ उसके प्रेम का संकेत हैं। जब हम उसकी इच्छा पूरी करना सीखते हैं, तो वे आज्ञाएँ बोझिल नहीं होतीं।

यदि वे किसी के लिए पालन करने हेतु बहुत बोझिल हैं, तो यह इस बात का संकेत है कि मसीह में विश्वास कमजोर है या उसमें कमी है। 1 यूहन्ना 2:4, जो कोई यह कहता है कि मैं उसे जानता हूँ, परन्तु उसकी आज्ञाओं को नहीं मानता, वह झूठा है, और उसमें सत्य नहीं। 1 यूहन्ना 5:3, परमेश्वर का प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें, और उसकी आज्ञाएं बोझ नहीं।

इसलिए, यह थोड़ा आश्चर्यजनक हो सकता है कि आज्ञा इतनी बार आती है। फिर भी, हम देखेंगे कि ईसाई जीवन और संतुलित ईसाई जीवन के बारे में जॉन के दृष्टिकोण में इसका एक कारण है। फिर भी, अभी के लिए, हम बस यह देख सकते हैं कि यह उन लोगों के लिए एक तरह की चेतावनी है जो ईश्वर की आज्ञाओं के प्रति उदासीन हैं या हम किसी तरह सोचते हैं कि, आप जानते हैं, हम प्रेम के मामले में बड़े हैं, हम आज्ञाओं के मामले में इतने बड़े नहीं हैं, लेकिन यह ठीक है क्योंकि ईश्वर का प्रेम है। वह एक ऐसा ईश्वर भी है जिसके पास अपने लोगों के अनुसरण के लिए शिक्षा और मार्गदर्शन है। अंतिम सबसे अधिक बार इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है पैटर, पिता, 14 बार।

13 बार, परमेश्वर पिता। 1 यूहन्ना में, यह 2 यूहन्ना में चार बार आता है। मरने वाले विश्वासियों के लिए परमेश्वर का संदेश या मरने वाले विश्वासियों के लिए यूहन्ना का संदेश पिता के प्रेम की

भव्यता और परिमाण है जिसके द्वारा हम मसीह के बलिदान के माध्यम से उसके बच्चे बन गए, जो अंत में हमारी आत्माओं के लिए दिव्य सुरक्षा का दृढ़ता और आश्वासन देता है।

हम संसार से अपने अलगाव को भी समझते हैं और अपेक्षा करते हैं, क्योंकि संसार पिता से अलग हो गया है। देखिए पिता ने हमें किस तरह का प्यार दिया है, जॉन लिखते हैं, कि हमें परमेश्वर की संतान कहा जाना चाहिए, और हम हैं भी। यह विस्मय और आश्चर्य का कथन है कि पिता का महान प्रेम हमें दिया जाना चाहिए, न केवल लाभों के संदर्भ में, बल्कि एक व्यक्तिगत मिलन के संदर्भ में ताकि हम उसके परिवार का हिस्सा बन जाएँ, हम उसके बच्चे बन जाएँ।

दुनिया हमें इसलिए नहीं जानती क्योंकि वह उसे नहीं जानती। इसलिए यह मरने वाले विश्वासियों के लिए संदेश है। यह परमेश्वर के लोगों के प्रति मानवीय शत्रुता को समझ में आता है क्योंकि परमेश्वर के लोगों के बारे में कुछ लोगों को जो बात नापसंद है वह यह है कि उनका परमेश्वर के साथ एक रिश्ता है।

वे परमेश्वर पिता के प्रेम को जानते हैं, और यह उन लोगों की ओर से शत्रुता और कभी-कभी ईर्ष्या और प्रतिशोध की भावना पैदा करता है जो परमेश्वर को नहीं जानते। ठीले लोगों के लिए उनका संदेश है कि पिता का प्रेम और पिता से मिलने वाला प्रेम संसार के प्रति प्रेम के विपरीत है। यदि आप स्वीकार करते हैं कि पुत्र संसार का प्रभु है और यदि आप स्वीकार करते हैं कि पुत्र संसार में हमारा उद्धार करने वाला खजाना है, तो यह और इससे कम कुछ भी नहीं है कि आपको पिता मिले।

दुनिया से बहुत ज़्यादा प्यार करना खुद को पिता के प्यार से दूर करना है। और मैंने ये आयतें पहले भी पढ़ी हैं, लेकिन मैं इस व्याख्यान का समापन इन्हीं आयतों के साथ करूँगा। लापरवाह लोगों के लिए एक संदेश।

तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है, तो उसमें पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषाएँ, और आँखों की अभिलाषाएँ और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।

आइए हम इन शब्दों को दिल से अपनाएँ, और अगर हम एक मरते हुए चर्च में हैं, तो हमें उनके माध्यम से दिशा, आश्वासन और ईश्वर की अपनी उपस्थिति मिलनी चाहिए। और अगर हम ठीले लोगों में से हैं, तो ईश्वर हमें दोषी ठहराए और हमें उस पर भरोसा करने के लिए वापस लाए।

यह डॉ. रॉबर्ट यारब्रो ने जोहानिन पत्रों पर अपनी शिक्षा में कहा है, मसीह में जीवन को संतुलित करना। यह सत्र संख्या 2बी है, 1, 2 और 3 जॉन में धार्मिक विषय।